जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

|| माह – सितम्बर 2021 || अंक – 14 || केवल आंतरिक वितरण हेतु||

अन्दर के पृष्ठों में...

दीदी की रसोई का स्वाद ले रहे किशनगंज के लोग (पृष्ठ – 02)

जीविका मोबाइल वाणी से आया व्यवहार में परिवर्तन (पृष्ठ – 03)

जीविका मोबाइल वाणी : अपनी बात समुदाय तक पहुंचाने का सशक्त एवं अनोखा माध्यम (पृष्ठ – 04)

दीदी की रसोई
स्वास्थ्य–पोषण व आर्थिक सशक्तीकरण का अभिनव प्रयास

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) गरीबी उन्मूलन हेतु बिहार सरकार की एक महत्त्वपूर्ण पहल है। वर्ष 2007 से अबतक राज्य के कुल 1 करोड़ 23 लाख परिवारों को 10 लाख 27 हजार से ज्यादा स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा गया है। वर्त्तमान समय में समूह से जुड़ी दीदियों की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए 64460 ग्राम संगठन एवं 1162 संकुल संघ सक्रिय हैं। जीविका अपने मुख्य उद्देश्यों के साथ सामाजिक कल्याण गतिविधियों का भी सफल संचालन कर रही है, जिसमें स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता का मुद्दा प्रमुख है। बिहार में जीविका की दीदियां परिवर्त्तन की वाहक एवं राज्य के नवनिर्माण की सृजनकर्त्ता हैं। जीविका दीदियां सामाजिक बदलाव के साथ आर्थिक विकास के अपने ध्येय की और निरंतर गतिमान हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए जीविका की दीदियों ने शुद्ध एवं पौष्टिक भोजन परोसने की पहल की है एवं उद्यम में कुशलता हासिल कर आर्थिक स्वाबलंबन की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। राज्य सरकार के दिशा–निर्देश के अनुसार कुडुम्बश्री के तकनीकी सहयोग से राज्य के अधिकांश जिलों में जीविका दीदियों द्वारा 'दीदी की रसोई' की स्थापना एवं उसका सफल संचालन किया जा रहा है।

12 जनवरी 2021 को आयोजित केबिनेट की बैठक में जिला एवं अनुमंडल अस्पतालों में 'दीदी की रसोई' के संचालन का निर्णय लिया गया। कैबिनेट की स्वीकृति के बाद योजना के अंतर्गत राज्य के अधिकांश जिला एवं अनुमंडल अस्पतालों में जीविका दीदियों द्वारा अस्पताल में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों एवं अन्य लोगों को उच्च गुणवत्ता युक्त खाना न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करवाया जा रहा है।

इस योजना के तहत मरीजों को सरकारी अस्पतालों में भी घर जैसा शुद्ध और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है जो मरीजों की सेहत के लिए लाभदायक है। उनके परिजनों को भी कम कीमत में स्वादिष्ट एवं शुद्ध भोजन आसानी से उपलब्ध हो रहा है। इससे उनका आर्थिक बोझ भी कम होता है। योजना से मिलने वाले भोजन से अस्पतालों के मरीज एवं उनके परिजन खुश हैं क्योंकि उन्हें अब अच्छे भोजन के लिए भटकना नहीं पड़ता है और घर जैसा खाना अस्पताल में ही उपलब्ध हो जाता है। योजना का दूसरा पहलु यह भी है कि इस योजना से जुड़ी जीविका दीदियों को रोजगार का एक नया साधन प्राप्त हुआ है। इस कार्य से जुड़ने के बाद सशक्त दीदियां आर्थिक रूप से भी मजबूत बन रही हैं। दीदी की रसोई का सफल संचालन जीविका एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त प्रयास से संभव हो पाया है।

'दीदी की रसोई' योजना के मुख्य उद्देश्यों में– महिलाओं को रोजगार प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त एवं स्वावलंबी बनाना है। साथ ही, अस्पतालों में मरीजों, मरीजों के परिजनों एवं अन्य लोगों को न्यूनतम मूल्य पर भोजन उपलब्ध करवाना भी है। इस योजना की विशेषता यह है कि दीदी की रसोई का संचालन पूरी तरह महिलाओं के स्वामित्व में है। इसके साथ दीदी की रसोई लाभकारी उद्यम का प्रतिरूप है एवं सदस्यों को प्रशिक्षित कर संबंधित कार्य में पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया गया है। पोषणयुक्त भोजन की स्वच्छता के साथ उपलब्धता सुनिश्चित करना भी दीदी की रसोई की विशेषता है।

दीदी की रसोई का स्वाद ले रहे किशनगंज के लोग

माँ की रसोई का स्वाद तो हम सब ने अपने जीवन में लिया है। अब जीविका दीदी की रसोई का स्वाद भी लोगों को मिल रहा है। किशनगंज के लोगों को भी अब यह स्वादिष्ट रसोई उपलब्ध हो गयी है। जीविका के माध्यम से किशनगंज सदर अस्पताल में 10 अगस्त को 'दीदी की रसोई' की शुरुआत हुई है। दीदी की इस रसोई में शुद्ध और स्वादिष्ट खाना, नाश्ता, चाय का प्रबंध है। इस रसोई से सदर अस्पताल के मरीजों को पौष्टिक खाना और नाश्ता दिया जा रहा है। यह सुविधा मरीजों के अलावा सभी के लिए उपलब्ध है। कलेक्ट्रेट, स्वास्थ्य विभाग तथा अन्य सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों में दीदी की रसोई का खाना मांग के अनुसार सप्लाई किया जा रहा है। दीदी की रसोई सदर अस्पताल परिसर में रोजाना लगभग सवा सौ लोग खाना खा रहे हैं। इससे शुरुआत से ही आमदनी अच्छी हो रही है। किशनगंज में इसकी शुरुआत शगुन महिला जीविका संकुल स्तर संघ चकला, किशनगंज सदर द्वारा की गई है। इस कैंटीन में खाना बनाने से लेकर उसका सप्लाई, प्रबंधन सब की जिम्मेदारी जीविका दीदियाँ ही संभाल रही हैं। इस कार्य के लिए रुचि और योग्यता अनुसार दीदियों का चयन किया गया है। चयनित दीदियों को जीविका के माध्यम से खाना बनाने, परोसने, खाना का दर तय करने, प्रबंधन, आतिथ्य, सेवा क्षेत्र का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। दीदी की रसोई की शुरुआत होने से किशनगंज, सदर अस्पताल परिसर में ही मरीजों के साथ आने वाले परिजनों को खाना – नाश्ता की सुविधा अब मिल रही है। दीदी की रसोई में सभी अपेक्षित सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। दीदी की रसोई के माध्यम से जीविका दीदियों का अपना कारोबार शुरू हुआ है। इस तरह के प्रयास से जीविका से जुड़ी ग्रामीण महिलाएँ स्वावलंबित हो रही हैं। इस से एक तरफ जहाँ किशनगंज के लोगों को शुद्ध और पौष्टिक आहार उचित कीमत पर उपलब्ध हो रहा है, वहीं जीविका दीदियों में उद्यमिता का विकास हो रहा है।

'दीदी की रसोई' आशा की नयी किरण

खगड़िया में 10 अगस्त 2021 को जिला के सदर अस्पताल में 'दीदी की रसोई' का शुभारम्भ किया गया। माननीय मुख्यमंत्री बिहार द्वारा एलान किया गया कि सभी सदर अस्पतालों में दीदी की रसोई का खाना मिलेगा। इसी घोषणा के बाद जिले में भी इस पर काम शुरू हो गया।

योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए पहले चरण में दीदियों का साक्षात्कार लिया गया। उसमें जो दीदी चयनित हुईं उनकी छह दिवसीय आवासीय ट्रेनिंग हुई। फिर दीदियों को दीदी की रसोई के लिए चयनित किया गया। केरल से कुडुम्बश्री से तीन सदस्य टीम खगड़िया जिला पहुंची जिसने दीदियों को खाना बनाने के साथ ही प्रबंधन का भी ट्रेनिंग दिया। खगड़िया ज़िले में दीदी की रसोई खुलने के बाद ज़िले के अस्पताल में मरीज़ों और उनके परिजनों में प्रसन्नता है। अस्पताल में पौष्टिक और उन्नत किस्म का खाना मिलने लगा है। सिर्फ मरीज़ और उनके परिजन ही नहीं बल्कि अस्पताल में काम करने वाले वहां के कर्मचारी भी दीदी की रसोई खुलने के बाद खुश दिखे। उनका यही कहना है कि दीदी की रसोई खुलने के बाद उनके खाने की समस्या बहुत हद तक कम हो गयी है।

दीदी की रसोई प्यार से साफ सुथरा खाना बनाती हैं जिसमें घर की तरह स्वाद होता है और न सिर्फ स्वस्थ्य वर्धक है बल्कि बाजार से बहुत काम कीमत पर उपलब्ध होता है। दीदी की रसोई सिर्फ अस्पताल में भर्ती मरीज़ों और उनके परीज़ों के लिए ही नहीं बल्कि उसमें काम कर रही दीदियों के लिए भी आशा की किरण है। इसमें काम कर रही दीदियां सक्षम हैं तथा स्वयं को पहले से अधिक सशक्त महसूस करती हैं। दीदी की रसोई के लिए 12 से 13 दीदियों का चयन हुआ है और सभी दीदियाँ अपने जीवन में आये इस बदलाव के लिए जीविका को धन्यवाद देती हैं।

जीविका मोबाइल वाणी से आया व्यवहार में परिवर्तन

नालंदा जिला के थरथरी प्रखंड के भतहर गाँव की रूबी देवी जीविका मोबाइल वाणी के कार्यक्रमों से जागरूक होकर खुद अपना एवं अपने बच्चे के स्वास्थ्य एवं पोषण का पूरा ख्याल रख रही हैं। जीविका मोबाइल वाणी के माध्यम से नालंदा जिला में जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी दीदियों एवं सामुदायिक कैडरों को स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी जानकारी उपलब्ध कराकर जागरूक करने का कार्य पिछले कई वर्षो से किया जा रहा है। रूबी देवी पिछले 17 माह से जीविका मोबाइल वाणी मोबाइल नम्बर 9250200111 पर मिस्ड कॉल करके सुन रही हैं। इस नंबर पर मिस्ड कॉल करने के पश्चात जीविका मोबाइल वाणी की ओर से उन्हें कॉल प्राप्त होता है। कॉल प्राप्त करने पर उन्हें स्वास्थ्य एवं पोषण के अलावा अन्य विषयों पर जानकारी मिलती है।

गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं और बच्चों के खानपान के बारे में उपलब्ध करायी जा रही जानकारी रूबी देवी को अच्छा लगता है एवं इन विषयों से संबंधित कार्यक्रमों को सबसे अधिक सुनती हैं। इन कार्यक्रमों को सुनते–सुनते वह 10 में से 5 खाद्य पदार्थों का सेवन की आवश्यकता, बच्चा होने के बाद एक घंटा के अंदर बच्चे को माँ को गाढ़ा दूध पिलाने, जन्म से छह माह तक सिर्फ माँ का दूध पिलाने तथा छह माह पूरा होने पर माँ के दूध के अलावा ऊपरी आहार खिलाने के बारे में वह जागरूक हो गई हैं। जागरूकता का परिचय देते हुए रूबी देवी जीविका मोबाइल वाणी के माध्यम से बताती हैं कि गर्भावस्था के दौरान वह 10 में से 5 खाद्य पदार्थों का सेवन किया। बच्चा स्वस्थ पैदा हुआ। बच्चा को जन्म के एक घंटा के अंदर अपना पीला गाढ़ा दूध पिलाया। अपने बच्चे को छह माह तक उसने सिर्फ अपना दूध पिलाया। आठ माह के अपने बच्चा को छह माह के बाद से उसने अपना दूध के अलावा ऊपरी आहार भी दे रही हूँ। 7 खाद्य समूहों में से 4 खाद्य समूह अपने बच्चे को खिला रहीं हूँ। रूबी कहती है कि मोबाइल वाणी से उनकी खान–पान के व्यवहार में काफी परिवर्तन आया है।

जीविका मोबाइल वाणी की जानकारी से बचा जीवन

मुजफ्फरपुर जिला के मीनापुर प्रखंड में खुशी जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के कार्यक्षेत्र अन्तर्गत पांच पंचायत हैं। वर्ष 2019 में खुशी जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के कार्यक्षेत्र में चमकी बुखार के कई मामले सामने आये और कुछ बच्चों की मौत हो गयी। इसके बाद जीविका द्वारा विभिन्न माध्यमों से चमकी बुखार एवं उसकी रोकथाम पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया।

ए.ई.एस को लेकर इस साल जीविका मोबाइल वाणी पर सभी एचएनएस – एमआरपी, सीएनआरपी, जीविका मित्र को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बताया गया कि जैसे ही आप जीविका मोबाइल वाणी के नंबर 8800458666 पर कॉल करेंगे एक रिंग होने के बाद फोन कट जाएगा। इसके कुछ देर बाद दूसरे नंबर से कॉल आएगा जिसपर चमकी बुखार एवं स्वास्थ्य पोषण से संबंधित जानकारी दी जाएगी।

जीविका मोबाइल वाणी का फायदा तब हुआ जब आंगन जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य सुशीला देवी के 9 वर्षीय पोते अमन को 6 जून, 2021 को बुखार हुआ। शुरुआत में तो सभी को लगा कि उसे समान्य बुखार है लेकिन कुछ समय बाद जब अमन के मुंह से झाग आने लगा और शरीर अकड़ गया तो सुशीला देवी को जीविका मोबाइल वाणी पर सुनाए गये राधा और उसकी बेटी माला की कहानी याद आने लगी कि कैसे राधा की बेटी माला की तबीयत खराब होने पर सबसे पहले उसे प्रथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया था। इसलिए सुशीला देवी तुरंत पोते को लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गयी। लेकिन बच्चे की स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने तुरंत उसे एसकेएमसीएच, मुजफ्फरपुर रेफर कर दिया। उसके तुंरत बाद उसने एंबुलेंस को फोन किया और पोते को लेकर अस्पताल आ गयी। यहां उनके पोते को एईएस वॉर्ड में रखकर एक सप्ताह तक इलाज चला। इसके बाद 13 जून, 2021 को बच्चे के स्वस्थ होने के उपरांत डिस्चार्ज कर घर भेज दिया गया।

जीविका मोबाइल वाणी

अपनी बात समुदाय तक पहुंचाने का सशक्त एवं अनोखा माध्यम

मोबाइल वाणी एक सामुदायिक मीडिया चैनल है। समुदाय के बीच स्वास्थ्य एवं पोषण–संबंधी जानकारियों का प्रसार करने, उन्हें विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक विषयों के बारे में जागरूक करने के साथ ही स्थानीय स्तर पर होने वाली गतिविधियों एवं खबरों से समुदाय को रू–बरू कराने का यह एक सशक्त एवं अनोखा माध्यम है। मोबाइल वाणी के माध्यम से आम नागरिक भी समुदाय से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियों, गतिविधियों, स्थनीय खबरों या अन्य प्रकार के संदेशों को रिकॉर्ड कराकर आम लोगों तक पहुंचा सकते हैं। मोबाइल वाणी एक ऐसा माध्यम है, जिसमें समुदाय जन–सरोकार से जुड़ी अपनी बातों को जन समुदाय तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। यह अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। जैसे बिहार में यह 'जीविका मोबाइल वाणी' के नाम से फिलहाल दो जिलों–नालंदा एवं मुजफ्फरपुर में प्रसारित हो रहा है। दोनों जिलों के लिए अलग–अलग मिस्ड कॉल नंबर है। नालंदा के लिए– 9250200111 एवं मुजफ्फरपुर के लिए 8800458666 नंबर निर्धारित है। इस नंबर पर मिस्ड कॉल करने पर जीविका मोबाइल वाणी की ओर कॉल प्राप्त होता है, जिसमें स्वास्थ्य, पोषण, व्यवहार परिवर्तन, जीविकोपार्जन, सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों या स्थानीय खबरों आदि से संबंधित सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इन सूचनाओं को सुनने के बाद कोई भी व्यक्ति 3 नंबर डायल कर अपना कमेंट दर्ज करा सकता है या अपना कोई सवाल पूछ सकता है। अर्थात पूर्व नियोजित सूचनाओं के अलावा मनपसंद प्रश्न पूछकर उसकी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। 3 नंबर डायल करने के बाद समुदाय के सदस्य अपनी बातें भी रिकॉर्ड करा सकता है, जिन्हें बाद में जीविका मोबाइल वाणी पर प्रसारित किया जाता है। इस प्रकार मोबाइल वाणी को समुदाय द्वारा एवं समुदाय के लिए सूचनाएं प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम कहा जा सकता है।

उद्देश्य : मोबाइल वाणी का उद्देश्य अलग–अलग लोगों के भिन्न–भिन्न विषयों पर उनके विचारों को एक मंच पर लाना है। इसलिए जब भी आप मोबाइल वाणी प्लेटफॉर्म पर अपना कोई सवाल, विचार या जवाब रिकॉर्ड कराते हैं, तो ये रिकॉर्डिंग समुदाय तक आसान भाषा में पहुंचाने के लिए कई मानक प्रक्रियाओं को पूरा किया जाता है। मोबाइल वाणी आईवीआर तकनीक के माध्यम से समुदाय तक पहुंचती है। हालांकि इसके अलावा मोबाइल एप्प एवं वेबसाइट पर भी यह उपलब्ध है, जहां अपनी पसंद की चीजों को सुना जा सकता है। मोबाइल वाणी द्वारा पंजीकृत मोबाइल नंबर पर सप्ताह में कम से कम दो बार कॉल किया जाता है। लेकिन कोई भी व्यक्ति जब भी चाहे संबंधित जिले के मोबाइल नंबर पर मिस्ड कॉल कर कभी भी अपनी पसंद की जानकारी सुन सकता है।

मोबाइल वाणी के मंच पर जीविका दीदियों को अपना विचार या मत खुलकर रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन किसी भी स्थिति में अपमानजनक अभद्र भाषा, गलत–आधारहीन या भ्रामक तथ्यों, राजनीतिक रूप से प्रायोजित सामग्रियों या निजी लाभ के उद्देश्य से रिकॉर्ड कराए गए संदेशों को प्रसारित नहीं किया जाता है। जीविका मोबाइल वाणी समाज के अत्यंत पिछड़े समूहों या वर्ग के लागों के अलग–अलग विचारों का उचित प्रतिनिधित्व करती है और एक–दूसरे के प्रति जवाबदेह भी बनाती है।

कार्यक्रम की रुपरेखा : जीविका मोबाइल वाणी के लिए मुख्यत : तीन प्रकार के कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। ये हैं–1. स्टूडियो में तैयार कार्यक्रम 2. उपयोगकर्ता द्वारा रिकॉर्ड कराए गए कार्यक्रम और 3. रिपोर्टर द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रम। ये कार्यक्रम समुदाय तक अलग–अलग रूपों में पहुंचते हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री सुमन कुमार – प्रबंधक संचार, किशनगंज
- सुश्री जूही – प्रबंधक संचार, खगड़िया